स्वस्थ नागरिक किसी देश के लिए सबसे बड़ी सम्पति होते हैं।

खेती री बातां

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

gramrajasthan.in

वर्ष-19 अंक-9 मासिक पत्रिका आर.एन.आई. - 70296/98 5 सितम्बर 2016 वार्षिक शुल्क- 12 रुपये

'ग्राम' में निवेशकों को आकर्षित करने हेतु आयोजित किए गए डोमेस्टिक रोड शो

राज्य सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों के नेतृत्व में देशभर में आयोजित किए गए 7 रोड शो

जयपुर में आगामी 9 नवम्बर से 11 नवम्बर तक आयोजित होने वाले 'ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2016 (ग्राम 2016)' के लिए देश के विभिन्न 7 शहरों में डोमेस्टिक रोड शो आयोजित किए गये। इन रोड शो का उद्देश्य इस विशाल आयोजन में निवेशकों की भागीदारी को आकर्षित करना था।

राज्य सरकार के वरिष्ठ मंत्रियों के नेतृत्व में और वरिष्ठ आई.ए.एस. अधिकारियों के समन्वय से ये रोड शो मुंबई (25 जुलाई), अहमदाबाद (27 जुलाई), कोलकाता (29 जुलाई), हैदराबाद (1 अगस्त), दिल्ली (5 अगस्त), बैंगलूरू (8 अगस्त) और चेन्नई (10 अगस्त) में आयोजित किए गये।

इन रोड शो में कृषि से जुडे विभिन्न संगठनों तथा उद्योगपतियों के अतिरिक्त राजस्थान में निवेश में रूचि रखने वाले अन्य क्षेत्रों के निवेशकों का व्यापक भागीदारी दर्ज की गई। मंत्रियों एवं अधिकारियों ने व्यापार जगत के प्रमुख व्यक्तियों व अग्रणी स्थानीय कंपनियों के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ वन–टू–वन बैठकें कीं।

प्रतिनिधिमंडल ने संबंधित राज्यों के निवेशकों को बताया कि राज्य द्वारा वर्ष

2022 तक किसानों की आय को दोगुना करने की दिशा में सक्रिय रूप से कार्य किया जा रहा है। उन्हें जानकारी दी गई कि 'ग्राम 2016' का मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि एवं इसके सम्बद्ध क्षेत्रों में तकनीकी नवाचारों तथा उच्च उत्पादन की ग्लोबल प्रेक्टिसेज से अवगत कराना और दुनिया भर के एग्री–बिजनस कम्युनिटीज के समक्ष राज्य में कृषि क्षेत्र में उपलब्ध निवेश के अवसरों को प्रदर्शित करना है।

इन रोड शो के माध्यम से ना सिर्फ 'ग्राम' के प्रति निवेश रूझान बढ़ा है, बल्कि कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों में राज्य को एक पसंदीदा निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित किया है। इसके अतिरिक्त, इन रोड शो में हितधारकों को राज्य के कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों में लागू नए अधिनियमों, अनुदानों एवं नीतियों के बारे में भी बताया गया।

उल्लेखनीय है कि ग्राम का आयोजन संयुक्त रूप से राजस्थान सरकार तथा फैडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (फिक्की) द्वारा किया जा रहा है। इसमें लगभग 50,000 किसानों के शामिल होने की संभावना है।

ग्राम 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

उपज से उन्नति तक जानें खुशहाली की हर बात

राज्य में किसानों को खेती के नये तरीकों व तकनीकी की जानकारी देने और कृषि क्षेत्र में निवेश को बढ़ाने के लिए ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम–2016) का आयोजन किया जा रहा है।

आपके लिए ये सब होगा ग्राम में.....

- ★देश–विदेश के खेती के उपकरणों की जानकारी व लाइव डेमो।
- ★कृषि क्षेत्र के अनुभवी लोगों से मिलने और सीखने का मौका।
- ★कृषि व पशुपालन से जुड़ी नई तकनीकों की जानकारी।
- ★कृषि व पशुपालन से जुड़ी कंपनियों के उत्पादों का प्रदर्शन।

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

ज्यादा जानकारी के लिए किसान कॉल सेन्टर 18001801551 पर सम्पर्क करें।

उन्नत कृषि प्रबन्धन अपनाकर सरसों की पैदावार बढ़ाएं

सरसों फसल सिंचित क्षेत्रों एवं संरक्षित नमी के बारानी क्षेत्रों में ली जा सकती है। सरसों कम लागत और कम सिंचाई सुविधा में भी अन्य फसलों की तुलना में अधिक उपज प्रदान करने वाली फसल है। इसे अकेले या मिश्रित फसल के रुप में बोया जा सकता है।

खेत का चुनाव व तैयारी:– सरसों हेतु दोमट व हल्की दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती हैं। अच्छे जल निकास वाली मिट्टी जो लवणीय एवं क्षारीय न हो ठीक रहती है। इसको हल्की ऊसर भूमि में भी बोया जा सकता है। अक्टूबर के पहले पखवाड़े में खेत तैयार करके सरसों की बुवाई करें। जिप्सम का हर तीसरे वर्ष प्रयोग करें। यदि भूमि अथवा सिंचाई जल क्षारीय नहीं है तो जिप्सम की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सरसों की खेती बारानी एवं सिंचित दोनों प्रकार से की जाती है। समय–समय पर खेत की स्थिति के अनुसार 4–6 जुताई करें। सिंचित क्षेत्रों के लिए भूमि की तैयारी बुवाई के 3–4 सप्ताह पूर्व प्रारम्भ करें।

भूमि उपचार:– दीमक और अन्य कीड़ों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व अन्तिम जुताई के समय क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलो प्रति हैक्टर की दर से खेत में डाल कर जुताई करें। नमी को घ्यान में रखकर जुताई के बाद पाटा लगायें।

बुवाई का समय:– बारानी क्षेत्रों में सरसों की बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक एवं सिंचित क्षेत्रों में इसकी बुवाई अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह तक कर देनी चाहिये।

उन्नत किस्में:– अरावली (आर.एन.– 393), पूसा बोल्ड, आर.एच.–30, लक्ष्मी, वसुन्धरा, आर.जी.एन.– 145, आर.आर.एन– 573, आर.बी.– 50, एन. आर.सी.डी.आर. – 601।

फसल चक्र:– सीमित सिंचाई जल की परिस्थिति में अधिक पैदावार एवं आर्थिक लाभ प्राप्त करने के लिए ग्वार–सरसों फसल चक्र अपनायें।

बीज की मात्रा:– बुवाई के लिए सिंचित क्षेत्रों में 2.5 किलोग्राम प्रति हैक्टर एवं असिंचित क्षेत्रों में बीज की मात्रा 4 से 5 किलो प्रति हैक्टर पर्याप्त है। पौधों के बीच की दूरी 10–15 से.मी. रखते हुए कतारों में 5 से.मी. गहरा बीच बोयें। कतार से कतार की दूरी 30–35 से.मी. रखें। असिंचित क्षेत्रों में बीज की गहराई नमी के अनुसार रखें।

बीजोपचार:– बीज को 2 ग्राम मैन्कोजेब या 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके ही बोयें। सफेद रोली से बचने के लिए बीज को मेटेलेक्जिल (एप्रोन 35 एस.डी.) 6 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके बोयें। रोगों से बचाव के लिए 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

मिश्रित खेती:– बारानी चने के साथ मिश्रित खेती करने से अधिक लाभ मिलता है। इससे फसल को पाला नहीं मारता है तथा दवा भी आसानी से छिड़की जा सकती है। सरसों व चने की अन्तः फसल 7:3 की पंक्ति के अनुपात में बोयें।

जैविक खाद एवं उर्वरक प्रयोग:– सिंचित फसल के लिए प्रति हैक्टर 8–10 टन अच्छा सड़ा हुआ देशी खाद बुवाई के तीन चार सप्ताह पूर्व खेत में डालकर तैयार करें। असिंचित क्षेत्र में वर्षा से पूर्व 4–5 टन सड़ा हुआ देशी खाद प्रति हैक्टर वर्षा के बाद खेत में फैलाकर जुताई करें। जस्ते की कमी वाली भूमि (0.6 पीपीएम से कम) में सरसों की उत्पादन वृद्धि हेतु अंतिम जुताई से पूर्व 20 किलो जिंक

शेष पृष्ठ 4 पर....

E mail : kheti_ri_batan@yahoo.co.in

इस अंक में....

- सितम्बर माह के कृषि कार्य
- परख
- लाईट ट्रैप–समन्वित कीट नियंत्रण की सुरक्षित एवं लाभकारी तकनीक पृष्ठ 2

- सोयाबीन में समन्वित कीट–रोग प्रबन्धन अपनायें....
- सब्जियों में जल प्रबन्धन
- खेती की नई जानकारी .... पृष्ठ 3

- भामाशाह पशु बीमा योजना
- खरीफ की दलहनी फसलों में फली छेदक कीट..... पृष्ठ 4

www.krishi.rajasthan.gov.in

दूरभाष – 0141–5116240, 2227365/354

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

सितम्बर माह के कृषि कार्य

फसलोत्पादन

★**अरहर व तिल** में पत्ती व फली छेदक, गॉल मक्खी एवं अन्य कीटों की रोकथाम के लिए एसीफेट 75 एस. पी., 500 ग्राम दवा प्रति हैक्टर 400 से 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें, आवश्यकतानुसार छिड़काव दोहरायें।

★**तिल** में छाछ्या रोग के नियंत्रण हेतु प्रति हैक्टर 20 किलो गन्धक चूर्ण का भुरकाव अथवा 200 ग्राम बाविस्टीन का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें। छिड़काव/ भुरकाव 15 दिन के अन्तराल पर दोहरायें।

★**तारामीरा** की बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक करें। उन्नत किस्म टी–27, आर.टी.एम.–314 (करण तारा), आर.टी. एम.–2002 (नरेन्द्र तारा) का उपयोग करें। बीज को 2 ग्राम मैन्कोजेब 75 डब्ल्यू. पी. या 2 ग्राम कार्बेण्डेजिम 50 डब्ल्यू.पी. प्रति किलो की दर से उपचारित करें। एक हैक्टर के लिए बीज की मात्रा 5 किलो एवं कतार से कतार की दूरी 30–45 से.मी. रखें। बुवाई के समय 65 किलो यूरिया एवं 100 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति हैक्टर की दर से ऊर कर देवें।

★**तोरिया** की बुवाई इस माह में करें। इसकी टी–9, टी.एल.–15 किस्में बुवाई के लिए उपयुक्त है। एक किलो बीज को 2.5 ग्राम मैन्कोजेब या 3 ग्राम ब्रेसीकॉल से उपचारित करें। बीज दर 4–5 किलो प्रति हैक्टर रखें। सिंचित फसल में बुवाई के समय 88 किलो यूरिया एवं 125 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट प्रति हैक्टर देवें। असिंचित फसल में उर्वरकों की मात्रा आधी देवें। कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर रखें।

★**कुसुम** की बुवाई 15 सितम्बर से अक्टूबर अन्त तक कर सकते हैं। कुसुम की जे.एस.एफ.–1, एन. 62– 8 तथा भीमा कांटेदार किस्में व जे.एस.एफ.– 5 बिना कांटेदार किस्म है। बीज की मात्रा 15 –20 किलो प्रति हैक्टर एवं कतार से कतार की दूरी 45 सेंटीमीटर रखें।

★**सोयाबीन** में फूल आने पर डाइमिथोएट 30 ई.सी. का एक लीटर प्रति हैक्टर की दर से 400 से 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। छिड़काव को 15– 20 दिन बाद पुनः दोहरायें।

★**कपास** में विभिन्न कीटों की रोकथाम के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मोनोक्रोटोफॉस 36 डब्ल्यू.एस.सी. एक लीटर प्रति हैक्टर या फेनवलेरेट 20 ई.सी. 500 मिली प्रति हैक्टर की दर से 400 से 500 लीटर पानी में घोल कर बनाकर छिड़काव करें।

★रबी फसलों सरसों, चना के लिए वर्षा जल व नमी संरक्षण का कार्य करें।

बागवानी

★**पपीते** की फसल में पर्ण कुंचन एवं मोजेक रोग की रोकथाम हेतु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर दें तथा रोग के प्रसार को रोकने के लिए डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटॉन 25 ई.सी. एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

★**आम** में माथा बंधना या कुरचना रोग (मॉल फोरमेशन) से प्रकोपित पौधों से रोगी भाग को काटकर नष्ट कर देना चाहिये एवं इन पौधों पर नेपथलिन एसिटिक एसिड (एन.ए.ए.) का 1 ग्राम प्रति 5 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। आम के बगीचे में पेड़ों के बीच खाली जमीन की जुताई करें। थालों में निराई–गुड़ाई करें।

★**नींबू** के पेड़ों के थालों में निराई–गुड़ाई करें। नींबू की फसल में केंकर रोग के लक्षण जैस पत्तियों, टहनियों व फलों पर भूरे रंग के मध्य से फटे, खुरदरे व कार्कनुमा धब्बे दिखाई देने पर रोगग्रस्त पत्तियों और टहनियों को काटकर नष्ट कर दें तथा बोर्डो मिश्रण (4:4:50) या स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 250 मिग्रा. एवं बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का 20 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

सब्जियाँ

★**फूलगोभी व पत्तागोभी** की पौध को रोपाई से पूर्व खरपतवार नियंत्रण के लिए प्रति हैक्टर 100 ग्राम ऑक्सीफ्ल्यूरेफेन छिड़क कर भूमि में मिलायें। तत्पश्चात् पौधों की रोपाई कतार से कतार की दूरी 60 सेमी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी. रखते हुए करें।

★**मटर** की अगेती किस्मों की बुवाई सितम्बर से अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक कर देनी चाहिये। मटर की अर्किल, हरा बोना, जवाहर मटर–4, आजाद पी–1, आर.पी.जी.–3 उन्नत किस्में हैं। प्रति हैक्टर 80–100 किलो बीज उपयोग में लेवें। मटर की फसल को जड़ गलन रोग से बचाने हेतु बीजों को बुवाई से पूर्व थाइरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. या मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

★**बैंगन** की शरद कालीन फसल में छोटी पत्ती रोग के नियंत्रण हेतु रोगग्रस्त पौधों को उखाड़कर नष्ट कर दें। रोग के नियंत्रण हेतु डाइमिथोएट 30 ई.सी. या मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या मैलाथियॉन 50 ई.सी. दवा एक मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें एवं आवश्यकतानुसार छिड़काव 15 दिन बाद दोहरायें।

पुष्पोत्पादन

★**ग्लैडियोलस** के 4–5 सेमी. व्यास आकार के कन्दों की 30 सेमी. की दूरी पर कतारों एवं पौधों की दूरी 20 से.मी. रखते हुए रोपाई करें।

★**ग्लैडियोलस** की रोपाई की तैयारी के लिए प्रति वर्गमीटर 10 किग्रा. गोबर की खाद/ कम्पोस्ट, 200 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट व 200 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश रोपाई के 15 दिन पूर्व अच्छी तरह मिला दें।

परख

अगस्त, 2016 के अंक में प्रकाशित आलेख में से दो प्रश्न पूछे गये थे। सही उत्तर भेजने वाले लॉटरी द्वारा चुने गये विजेता कृषक का नाम है–

1. श्री कपिल पुष्करना,
पुत्र श्री प्रेम शंकर जी,
ग्रा.– ईन्टाली, वाया– फतहनगर,
तह.– मावली,
जिला– उदयपुर (313205)

2. श्री हुक्मी चन्द,
पुत्र श्री हीरालाल जी सैन,
ग्रा. पो.– मोही, वाया– कांकरोली,
जिला– राजसमन्द

इस माह के प्रश्न हैं –

प्र.1 खरीफ की दलहनी फसलों में फली छेदक कीट के नियंत्रण के लिए एक जैविक कीटनाशी का नाम बतायें।

प्र.2 सरसों फसल की दो उन्नत किस्मों के नाम बतायें।

तो आप भी उठाइये पैन व पोस्ट कार्ड और हमें लिख भेजिये इन दोनों प्रश्नों के सही जवाब। हमारा पता है:–
उप निदेशक, कृषि (सूचना),
कमरा नम्बर 118,
कृषि निदेशालय,पंत कृषि भवन,
जयपुर–302005

पशुपालन व दुग्ध उत्पादन

★दुधारु पशुओं को खुरपका–मुँहपका रोग से मुक्त कराने के लिए अपने पशुओं को 6–6 माह में दो बार टीका अवश्य लगवायें।।

★दुधारु पशुओं में थनैला रोग से बचाव के उपाय करें।

★पशुओं को अन्तःपरजीवी नाशक दवाई पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार नियमित दें।

लाईट ट्रैप – समन्वित कीट नियंत्रण की सुरक्षित एवं लाभकारी तकनीक

फसलों को हानिकारक कीटों से बचाने हेतु सामान्यतया कृषक कीटनाशी रसायनों का अधिक तथा अनुचित मात्रा में उपयोग करते हैं। जिसके फलस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण, मनुष्य, जीव–जन्तुओं पर हानिकारक प्रभाव एवं कीटों में कीटनाशी रसायनों के प्रति प्रतिरोधकता उत्पन्न हो रही है।

उक्त परिणामों को देखते हुए समन्वित नाशीजीव प्रबन्धन (आई.पी.एम.) तकनीकी को अपनाया जाना आवश्यक है जिससे कीट/व्याधि नियंत्रण में रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग में कमी हो। आई.पी.एम. की कड़ी में लाइट–ट्रैप (प्रकाश–यंत्र) कीट नियंत्रण की एक महत्वपूर्ण यांत्रिक विधि है जिसमें खर्चा कम एवं लाभ अधिक है।

लाईट ट्रैप कैसे कार्य करता है –

लाईट ट्रैप में एक बल्ब होता है, जिसको जलाने के लिए बिजली/बैटरी की आवश्यकता होती है। जिससे कीड़े आकर्षित होकर बल्ब से टकराकर इसके नीचे लगी कीप में गिरकर कीट संग्रहण कक्ष में इकट्ठे हो जाते हैं। कीट संग्रहण कक्ष सुरक्षा कवर से ढ़का होता है जो की नीचे से खुला होता है। कीट संग्रहण कक्ष एवं सुरक्षा कवर के बीच दो लाईट लगी होती हैं, जो संग्रहण कक्ष से लाभदायक कीड़ों को आकर्षित करने में सहायक होती है। शत्रु कीट संग्रहण कक्ष में फंसे रह जाते हैं जिनको आसानी से नष्ट किया जा सकता है।

खेत में लाईट ट्रैप कैसे स्थापित करें?

- खेतों में लाईट ट्रैप को फसल की ऊँचाई से 2 फीट ऊपर लगाना चाहिये।
- शाम के 7:00 से 10:00 बजे तक ट्रैप में लाईट चालू रखनी चाहिये।
- एक हैक्टर क्षेत्र के लिए एक लाईट ट्रैप पर्याप्त रहता है। इसको खेत में बीचों–बीच लगाना चाहिये।
- कीट संग्रहण कक्ष में एकत्रित कीड़ों को मारने के लिए डाईक्लोरोवॉस (DDVP) 76 प्रतिशत ई.सी नामक रसायन में रूई का फोआ डुबोकर उपयोग में लिया जा सकता है।
- कीट संग्रहण कक्ष से कीटनाशी रसायन में डूबे हुए रूई के फोऐ को उपयोग के तुरन्त बाद हटा देना चाहिये एवं इसके बाद फिल्टर को साफ करना चाहिए।

लाईट ट्रैप से लाभ –

- फसलों, सब्जियों, फलों, मशरूम, जंगली पेड़ों आदि के मुख्य कीटों को लाईट ट्रैप का उपयोग कर मास ट्रेपिंग की जा सकती है। मास ट्रेपिंग से कीटों की संख्या कम होती है।
- कीट संग्रहण कक्ष में छिद्र होते हैं जिससे लाभदायक कीड़े हानिकारक कीटों से अलग हो जाते हैं।
- लाईट ट्रैप एक बार क्रय करने के बाद इसका उपयोग कई वर्षों तक किया जा सकता है एवं लाभदायक कीटों को बचाने के लिए किसान अकेला एवं समूह में प्रयोग कर सकता है।
- लाईट ट्रैप के उपयोग से कीटनाशी रसायनों का उपयोग कम होगा जिसके फलस्वरूप खर्चा कम होगा तथा जैव विविधता बढ़ेगी और पर्यावरण संरक्षण होगा।

ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 9-11 नवम्बर 2016 जयपुर

सोयाबीन में समन्वित कीट रोग प्रबन्धन अपनायें– भरपूर उपज पायें

सोयाबीन हाड़ौती क्षेत्र में खरीफ की एक प्रमुख फसल है। सोयाबीन की फसल में 30–50 प्रतिशत नुकसान कीड़े–बीमारियों के प्रकोप के कारण होता है। इस फसल में कई प्रकार के कीट–व्याधियों का प्रकोप मौसम की अनुकूल परिस्थितियाँ होने पर होता है। प्रायः यह देखा गया है कि अगस्त–सितम्बर माह से फसल में तम्बाकू की इल्ली, गर्डल बीटल, सेमीलूपर, पीतशिरा रोग, जीवाणु रोग, झुलसा रोग एवं तना गलन रोग आदि कीट–व्याधियों के प्रकोप की आशंका रहती है। अतः समय पर इन कीट–व्याधियों के नियंत्रण के उपाय अपना कर फसल को होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

सोयाबीन के प्रमुख कीट

तम्बाकू की इल्ली :- सोयाबीन में इस कीट का आक्रमण अगस्त–सितम्बर से

फसल पकने तक रहता है। इल्लियाँ जब छोटी होती हैं तब झुंड मे पत्ती की निचली सतह से उत्तकों या पर्ण हरित भाग को खाकर बहुत हानि पहुँचाती हैं।

नियंत्रण:-

* इस कीट के नियंत्रण के लिए खेत एवं आसपास की सफाई तथा खरपतवारों का प्रबंधन करें। खड़ी फसल में यूरिया का उपयोग नहीं करें।
* प्रत्येक दस दिन में खेत का सर्वेक्षण करें ताकि कीट की उपस्थिति का पता लगाया जा सकें।
* प्रकाश–पाश का उपयोग करें। इसके लिये खेत की मेड़ों पर एवं खेतों में गैस लालटेन या बिजली का बल्ब जलायें तथा उसके नीचे केरोसीन मिले पानी (5 प्रतिशत) के घोल को परात में रखें ताकि रोशनी से आकर्षित होकर पतंगे घोल में गिरकर नष्ट हो जायें। यह प्रक्रिया मानसून की वर्षा प्रारम्भ होते ही सितम्बर तक जारी रखें।
* एक लाईट ट्रेप प्रति हैक्टर क्षेत्र में लगायें।
* पाँच फेरोमेन ट्रेप प्रति एक हैक्टर क्षेत्र में लगायें।
* अण्डों के समूह तथा लार्वा को चुन–चुन कर नष्ट करें।
* चिड़ियों के बैठने के लिये खेतों में खपच्चियाँ लगायें।
* प्रारम्भिक अवस्था में एन.पी.वी. 250 एल.ई. अथवा बैसिलस थ्रूरिनजेनेसिस (बी.टी.) 1 किग्रा प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें या क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. 1.5 लीटर या ट्राईजोफॉस 40 प्रतिशत ई.सी. 800 मिली. या इण्डोक्साकार्ब 15.8 प्रतिशत ई.सी. 300 मिली. प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
* लटों के अत्यधिक आक्रमण होने पर सोयाबीन के खेत के चारों ओर 15 से.मी. गहरी व 10 से.मी. चौड़ी खाईयाँ बनाकर उनमें मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण का भुरकाव करें। इससे लटों के एक खेत से दूसरे खेत में आवागमन पर अवरोध लग जायेगा।

गर्डल बीटल :- यह इस फसल का प्रमुख हानि कारक कीट है। अनुमानतः 25–30

दिन की फसल पर वयस्क मादा पत्तियों के तने या डंठल पर 1 से 1.5 सेमी. के फासले पर दो घेरे (कुंडलियाँ) बनाती है तथा इन घेरों के बीच एक–एक अण्डा देती है तथा अण्डों से लटें निकलती है। ये लटें डंठल का गुदा खाती हुई तने की तरफ जाकर तने में प्रवेश कर नुकसान पहुँचाती है।

नियंत्रण:-

* कीट की रोकथाम हेतु 30–35 दिन की फसल पर फेन्थियॉन 82.5 प्रतिशत ई.सी. या डायमिथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1 लीटर या मोनोक्रोटोफॉस 36 प्रतिशत एस.एल. 1 लीटर या एसिफेट 75 प्रतिशत एस.पी. 500 ग्राम या ट्राईजोफॉस 40 प्रतिशत ई.सी. 800 मिली. या थायोक्लोप्रिड 21.7 प्रतिशत एस.सी. 750 मिली. या थायोमिथोक्साम 25 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. 100 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। 10–15 दिन बाद छिड़काव दोहरायें।

हरी अर्ध कुण्डलक (सेमीलूपर)

* इस कीट की मादा पत्तियों पर अण्डे देती हैं जिससे इल्लियाँ निकल कर पत्ती

को खाती हैं। अधिक प्रकोप होने की दशा में लटें पत्तियों को खाकर छलनी कर देती हैं।

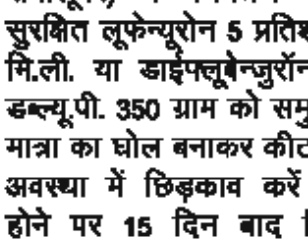

नियंत्रण:-

* एक लीटर बी.टी. का घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।
* सोयाबीन में हरी अर्ध कुण्डलक की रोकथाम के लिये ट्राईजोफॉस 40 प्रतिशत ई.सी. का 800 मिलीलीटर प्रति हैक्टर की दर से बुवाई के 25 तथा 45 दिन बाद छिड़काव करें या 30–35 दिन की फसल अवस्था पर प्रति हैक्टर 1.5 लीटर क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. या क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. का समुचित पानी की मात्रा में घोल बनाकर छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर 40–50 दिन की फसल अवस्था पर छिड़काव पुनः दोहरायें।
* सोयाबीन की हरी अर्ध कुण्डलक (ग्रीन सेमीलूपर) के नियंत्रण हेतु पर्यावरण सुरक्षित लूफेन्यूरोन 5 प्रतिशत ई.सी. 500 मि.ली. या डाईफ्लूबेन्जुरॉन 25 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. 350 ग्राम को समुचित पानी की मात्रा का घोल बनाकर कीट की प्रारम्भिक अवस्था में छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर 15 दिन बाद छिड़काव पुनः दोहरायें।
* इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 प्रतिशत एस.जी. 180 ग्राम प्रति हैक्टर या इण्डोक्साकार्ब 15.8 प्रतिशत ई.सी. 300 मिली प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें।

बालों वाली लट :- फली लगने के समय काली, लाल व भूरे रंग के बालों वाली लट पत्तियों को खाकर छलनी कर देती है

जिसका प्रभाव पैदावार पर पड़ता है।

नियंत्रण:-

* रोकथाम हेतु क्यूनॉलफॉस 1.5 प्रतिशत या मिथाईल पैराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण का 25 किलो प्रति हैक्टर भुरके या प्रकोप दिखाई देते ही फ्लूबेण्डामाईड 39.35 प्रतिशत एस.सी. 150 मिली प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

सोयाबीन के प्रमुख रोग :-

* पीतशिरा रोग:– रोग ग्रसित पौधे छोटे रह जाते हैं। पौधे की बढ़वार कम होती है तथा पौधों की पत्तियों की नसें साफ दिखाई देने लगती है। पौधों का नरमपन कम होना, बदशक्ल होना, ऐंठ जाना, सिंकुड़ जाना इत्यादि लक्षण है।

नियंत्रण:-

* थायोमिथोक्जाम 25 प्रतिशत डब्ल्यू.जी. 100 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से अंकुरण के 6–7 दिन बाद छिड़काव करें तथा आवश्यकता होने पर 7 दिन के अंतराल पर दोहराते रहें।

जीवाणु झुलसा रोग:- बुवाई के 30–40 दिन बाद पत्तियों पर हल्के भूरे रंग के धब्बे बन जाते हैं। शुरु में यह छोटे होते है। लेकिन बाद में नमी के कारण यह आकार में बढ़ जाते हैं।

नियंत्रण :-

* जीवाणु झुलसा रोग की रोकथाम के लिये 200 पी.पी.एम. स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 0.02 प्रतिशत (2 ग्राम प्रति 20 लीटर पानी) तथा 0.2 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीक्लोराईड 50 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर बीमारी के लक्षण दिखाई देते ही छिड़काव कर देवें। यदि जरुरत हो तो 15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें। रोकथाम हेतु मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

तना गलन रोग:- इस रोग से जमीन से 10–15 सेन्टीमीटर ऊपर तने पर भूरे व काले रंग के दाग बन जाते हैं। धीरे–धीरे पौधा सूखने लगता है।

नियंत्रण :-

* रोकथाम हेतु 1.5–2 किग्रा मैन्कोजेब 75 प्रतिशत डब्ल्यू.पी. का 600–700 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें।

सब्जियों में जल प्रबन्धन

शाकभाजी वाली फसलें मुख्यतः हरी अवस्था में ही काटी जाती है। इसलिए इन फसलों को बोने से लेकर कटने तक पानी की आवश्यकता होती है। पत्ती वाली सब्जियों को 1 ग्राम शुष्क पदार्थ बनाने के लिए कद्दूवर्गीय सब्जियों की तुलना में अधिक पानी की आवश्यकता होती है। सब्जियाँ जिनका वाष्पोत्सर्जन दर अधिक होता है, वह सूखे का दबाव अधिक सहन नहीं कर पाती हैं और पानी की कमी होने पर उनकी बढ़वार एवं उपज पर प्रतिकूल

प्रभाव पड़ता है। इसके विपरित ऐसी सब्जियाँ जिनका वाष्पोत्सर्जन कम होता है वह नमी की कमी को सहन कर लेती है। पानी की मांग के अनुसार सब्जियों का वर्गीकरण निम्नानुसार है –

अधिक – चौलाई, ब्रोकली, पत्तागोभी, मूली, शिमला मिर्च, शलजम।

सामान्य – बैंगन, मिर्च, गाजर, खीरा, आलू, टमाटर।

कम – चुकन्दर, ग्वार, लोबिया, राजमा, मटर,

न्यूनतम – लौकी खरबूज, तरबूज।

सब्जियों में सिंचाई की क्रांतिक अवस्थायें:– फसलों की वृद्धिकाल में ऐसी अवस्था आती है जब जल की कमी के प्रति पौधे अत्यंत संवेदनशील होते हैं। इस अवस्था को जल क्रांतिक अवस्था कहते है। क्रांतिक अवस्था में पौधों के सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती है। यदि इस अवस्था में सिंचाई नही की जाती है तो फसल की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। अतः इन अवस्थाओं में सिंचाई अति आवश्यक होती हैं। ये अवस्थायें हर फसल में अलग–अलग समय पर आती है। इस समय यदि सिंचाई की कमी रह जाती है तो उपज में अप्रत्याशित कमी आ सकती है।

सब्जियाँ	सिंचाई की क्रांतिक अवस्थायें
ब्रोकली	ब्रोकली में शीर्ष बढ़ने के समय
टमाटर	फूल आने एवं फल बढ़ने के समय
बैंगन	फूल आने एवं फल बढ़ने के समय
मिर्च	फूल आने एवं फल बढ़ने के समय
गोभी	शीर्ष बढ़ने और बनने के समय
गाजर, मूली, व शलजम	जड़ बढ़ते समय
खीरा	फूल आने एवं फल बढ़ते समय
प्याज	शल्क कंद आने व बढ़ने के समय
भिण्डी	फूल आने फल बढ़ने के समय
मटर	फूल एवं फल आने के समय
आलू	कंद बनते एवं बढ़ने के समय

खेती की नई जानकारी के लिए....

बात करें

किसान कॉल सेंटर
निःशुल्क टेलीफोन
1800 180 1551 या 1551 पर
(प्रातः 6 से रात्रि 10 बजे तक)

देखें

जयपुर दूरदर्शन पर
खेती बाड़ी–2 › गुरुवार सायं 7.30 बजे
कृषि दर्शन › सोमवार से शुक्रवार सायं 5.30 बजे
डी.डी.किसान → 24 घंटे–प्रतिदिन

सुनें

"खेती री बातां" आकाशवाणी कार्यक्रम
आकाशवाणी के सभी केन्द्रों से
प्रतिदिन सायं 7.45 से 8.15 तक

पढ़ें

"खेती री बातां" मासिक अखबार
डाक से मंगवाने के लिए मात्र
12 रुपये वार्षिक शुल्क निकटतम
कृषि कार्यालय में जमा करायें

मिलें

नजदीकी कृषि कार्यालय या
जिले के कृषि विज्ञान केन्द्र में

लॉग ऑन करें

www.krishi.rajasthan.gov.in
(विभागीय वेबसाइट)
www.mkisan.gov.in
www.farmer.gov.in
(संदेश व अन्य जानकारी)

ऐसे मंगवायें "खेती री बातां"
घर बैठे वर्षभर *खेती री बातां* अखबार मंगवाने के लिये अपने नजदीकी कृषि कार्यालय में सम्पर्क करें या आहरण वितरण अधिकारी, कमरा नं.—250, कृषि निदेशालय, पंत कृषि भवन, जयपुर (302005) के नाम 12/— रुपये का मनीआर्डर भेजें। *स्वयं का साफ—साफ डाक का पूरा पता, पिन कोड़ नंबर व मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।*

डाक पं.सं. JaipurCity/409/2015-17
आर.एन.आई — 70298/98
प्रेषक—
उप निदेशक, कृषि (सूचना)
118, पंत कृषि भवन,
जयपुर—302005

प्रेषिति—

भामाशाह पशु बीमा योजना

उद्देश्य:— इस योजना का मुख्य उद्देश्य राज्य के पशुपालकों को उनके बहुमूल्य पशुओं का अनुदानित प्रीमियम दरों पर बीमा करवाकर उन्हें आर्थिक रुप से सम्बल प्रदान करना है।

पात्रता:—

★ पशुपालक भामाशाह कार्ड धारक होने चाहियें।

★ बीमित किये जाने वाला पशु किसी अन्य योजना के अन्तर्गत बीमित नहीं होना चाहिये।

★ इस योजनान्तर्गत देशी/संकर नस्ल के दूध देने वाले पशु यथा गाय, भैंस एवं भार ढ़ोने वाले पशु यथा ऊँट, घोड़ा, गधा, सांड, पाड़ा एवं अन्य पशु जैसे बकरी, भेड़, सूअर इत्यादि का बीमा अनुदानित प्रीमियम दरों पर किया जायेगा।

★ भेड़, बकरी, सूअर की एक कैटल यूनिट में 10 पशु मानते हुए एक परिवार के कुल 50 पशुओं का बीमा किया जा सकता है अथवा पाँच बड़े पशुओं (गाय, भैंस, ऊँट, घोडा, गधा, सांड, पाड़ा,) का बीमा अनुदानित दरों पर किया जायेगा। प्रत्येक परिवार के अधिकतम पाँच कैटल यूनिट का बीमा किया जायेगा।

प्रीमियम दर:—

विवरण	प्रीमियम दरें (प्रतिशत में)सर्विस टैक्स अतिरिक्त	
	एक वर्ष के बीमा हेतु	तीन वर्ष के बीमा हेतु
दुधारु गाय एवं भैंस	2.79	7.4
अन्य पशु (भेंड, बकरी, सुअर)	4.00	10.5
भार ढ़ोने वाले पशु (ऊँट, घोड़ा, गधा, साण्ड/पाड़ा)	3.5	9

★ भेड़ों को 25 कि.मी. से अधिक दूरी पर निराक्रमण पर ले जाये जाने की परिस्थिति होने पर बीमा का लाभ लेने हेतु 1 प्रतिशत अतिरिक्त प्रीमियम+सर्विस टैक्स पशुपालक द्वारा बीमा के समय दिया जाना होगा।

अनुदानित बीमा के लिए कीमत की गणना हेतु पशु की अधिकतम कीमत निम्नानुसार होगी:—

विवरण	राशि (रुपयों में)
दुधारु गाय	40,000/—
दुधारु भैंस	50,000/—
अन्य पशु (10 भेड़/10 बकरी/10 सुअर)	50,000/—
भार ढ़ोने वाले पशु (ऊँट/घोड़ा/गधा/ साण्ड/ पाड़ा)	50,000/—

अनुदान:—

★ अनुसुचित जाति/अनुसुचित जनजाति/बी.पी.एल. श्रेणी के पशुपालकों को 70 प्रतिशत।

★ सामान्य श्रेणी के पशुपालकों को 50 प्रतिशत।

★ सम्पूर्ण प्रीमियम पर सर्विस टैक्स पशुपालक द्वारा देय होगा।

बीमा की प्रक्रिया:—

★ पशुपालक को अपने पशुओं का बीमा करवाने हेतु नजदीकी पशु चिकित्सालय में सम्पर्क कर प्रस्ताव पत्र व बीमा स्वीकृति पत्र भरना होगा तथा अपने हिस्से की प्रीमियम राशि सर्विस टैक्स सहित बीमा कम्पनी के प्रतिनिधि/संबंधित पशु चिकित्सा अधिकारी/ई—मित्र पर जमा करानी होगी।

★ बीमित पशु की पहचान हेतु पशु के टैग लगाया जाना एवं पशु का टैग सहित फोटो लिया जाना आवश्यक होगा।

★ पशु का स्वास्थ्य प्रमाण—पत्र सरकारी पशु चिकित्सकों द्वारा जारी किया जायेगा।

★ पशुपालक को अपने पशुओं का बीमा करवाने हेतु निम्न दस्तावेज प्रस्तुत करने आवश्यक होंगे:—

- आवेदन पत्र
- पशु का स्वास्थ्य प्रमाण—पत्र
- पशु के कान में टैग सहित पशुपालक का फोटो
- भामाशाह कार्ड की प्रति
- बी.पी.एल. कार्ड/ अनुसुचित जाति/ अनुसुचित जनजाति से संबंधित दस्तावेज की प्रति
- बैंक का नाम, खाता संख्या, आई.एफ.एस.सी. कोड
- आधार कार्ड की प्रति (यदि हो)
- अपने हिस्से की प्रीमियम राशि

बीमा लाभ:—

★ रोग अथवा दुर्घटना से बीमित पशु की मृत्यु पर 100 % बीमा लाभ होगा।

बीमित पशु की मृत्यु की स्थिति में क्लेम की प्रक्रिया:—

★ बीमित पशु की मृत्यु हो जाने की दशा में बीमा कम्पनी के अधिकृत कार्यालय /प्रतिनिधि एवं संबंधित जिले के संयुक्त निदेशक, पशुपालन विभाग अथवा प्रतिनिधि को मोबाईल/ दूरभाष एवं ई—मेल/ मोबाईल पर एस.एम.एस. अथवा व्यक्तिशः पशु की मृत्यु होने के सामान्यतः छः घंटे के अन्दर सूचित करना होगा।

★ सर्वेयर की उपस्थिति में मृत पशु का सर्वे करवाना एवं मृत पशु का पोस्टमार्टम पशु चिकित्सक द्वारा करवाना आवश्यक होगा।

★ मृत पशु का पोस्टमार्टम पशुचिकित्सक द्वारा करते हुए फोटो ली जानी आवश्यक होगी। पशु की मृत्यु होने पर राशि का दावा किये जाने हेतु निम्नानुसार कार्य किये जाने हैं:—

- बीमा कम्पनी को मोबाईल/ दुरभाष एवं ई—मेल/ मोबाईल पर एस.एम.एस. अथवा व्यक्तिशः सूचित करना।
- बीमा कवर/ बीमा पॉलिसी की प्रति बीमा कम्पनी को उपलब्ध कराना।
- क्लेम फार्म भरकर बीमा कम्पनी को उपलब्ध कराना।
- पशु का मृत्यु प्रमाण—पत्र, पशु चिकित्सक द्वारा पोस्टमार्टम करते हुए फोटो एवं टैग बीमा कम्पनी को उपलब्ध कराना।

अधिक जानकारी के लिए —
यूनाईटेड इंडिया इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, जयपुर के टेलिफोन नं. 0141—2731710 व मोबाईल नं. 9001531892, 9828329375 पर जानकारी प्राप्त करें।

खरीफ की दलहनी फसलों में फली छेदक कीट का नियंत्रण

- दलहनी फसलों मूंग, मोठ, चँवला में फूल आने की अवस्था (30—40 दिन) पर फली छेदक कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है।

- फसल की इस अवस्था पर फैरोमोन ट्रेप (5 ट्रेप प्रति हैक्टर) लगायें।
- फैरोमोन ट्रेप में फली छेदक के 4—6 नर पतंगे पाये जाने पर नियंत्रण उपाय शुरू करें।
- समन्वित कीट नियंत्रण के लिए फसल में आर्थिक क्षति स्तर पर नीम आधारित कीटनाशी दवा अजाडिरेक्टिन 0.03 ई.सी. 1.5 लीटर/है. का छिड़काव करें। दूसरा छिड़काव 50 प्रतिशत फूल आने पर अथवा 1—2 सुंडी प्रति पौधा दिखाई देनें पर न्यूक्लियर पोली हाइड्रोसिस वायरस (एन.पी.वी. 250.एल.ई.) 125 मिली लीटर प्रति हैक्टर पानी में घोल कर प्रातः या सायं कालीन छिड़काव करें।
- कीट का प्रकोप होने पर क्यूनालफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. या मोनोकोटोर्फॉस 36 प्रतिशत डब्ल्यू.एस.सी. 1 लीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत डब्ल्यू .पी. 2.5 किलो प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करें अथवा क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 20—25 किलो प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव कर सकते है।

पृष्ठ 1 का शेष......

सल्फेट प्रति हैक्टर की दर से भुरकाव करके मिट्टी में मिला दे।

मिट्टी परीक्षण के परिणाम के अनुसार उर्वरकों का प्रयोग करें, यदि मिट्टी का परीक्षण नहीं कराया गया हो तब सिंचित फसल के लिए 80 किलो नत्रजन, 40 किलो फॉस्फोरस एवं 40 किग्रा पोटाश तथा 300 किलो जिप्सम या 40 किलो गंधक चूर्ण प्रति हैक्टर देवें। नत्रजन की आधी व फॉस्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय उर कर देवें तथा शेष नत्रजन पहली सिंचाई के साथ देवें। असिंचित क्षेत्रों में बताये गये उर्वरकों की आधी मात्रा ही बुवाई के समय डालें।

गंधक अथवा जिप्सम दो वर्ष में एक बार देना ही पर्याप्त है। अधिक उत्पादन के लिए सरसों में फूल आने की अवस्था पर थायोयूरिया का 0.1 प्रतिशत (1 ग्राम प्रति लीटर पानी) घोल का छिड़काव करें।

सिंचाई:— प्रथम सिंचाई 30—40 दिन बाद फूल आने से पहले करें, तत्पश्चात आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई 70 से 80 दिन में करें।

निराई—गुड़ाई:— पौधों की संख्या अधिक हो तो बुवाई के 20—25 दिन बाद निराई कर खरपतवार निकाले एवं निराई के साथ छंटाई कर घने पौधे को निकाल कर पौधे के बीच की दूरी 10—12 से.मी. कर दे। सिंचाई के बाद गुड़ाई करने से खरपतवार नष्ट होने के साथ फसल बढ़वार अच्छी होगी।

फसल की कटाई एवं उपज:— सरसों की फसल फरवरी मार्च तक पक जाती है। आमतौर पर जब पत्ते झड़ने लगें और फलियाँ पीली पड़ने लगे तो फसल काट लें अन्यथा कटाई में देर होने पर दाने खेत में झड़ जाने की आशंका रहती है। सरसों की औसतन उपज 15—20 क्वि. प्रति हैक्टर प्राप्त होती है।

ध्यान देने योग्य बातें:—

★बीजोपचार कर बुवाई करें।

★बुवाई से पूर्व संतुलित उर्वरक का प्रयोग करें।

★अनुकूलतम पौधों की संख्या रखें।

★फसल को पाले से बचाने के लिए फसल पर गंधक के तेजाब के 0.1% (1 लीटर प्रति 1000 लीटर पानी) घोल का छिड़काव फूल आने से पूर्व अच्छी तरह करें। इसे सम्भावित पाला पड़ने की अवधि में दोहराते रहना चाहिये।

स्वत्वाधिकारी कृषि विभाग राजस्थान सरकार के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक उप निदेशक, कृषि (सूचना), कृषि विभाग, राजस्थान, जयपुर द्वारा कृषि सूचना मुद्रणालय, जयपुर से मुद्रित और पंत कृषि भवन, जनपथ, जयपुर से प्रकाशित।
प्रकाशक - खेमराज शर्मा
सम्पादक - सुनिता घोसल्या
परामर्श - जे.पी. यादव
- राजेन्द्र सिंह मनोहर
डिजाइनर - रैजवल मैसी

कृषि सूचना मुद्रणालय/अगस्त 2016/86/25400